Paper:	MAITHILI
Set Name:	SET 04
Exam Date:	30 Aug 2022
Exam Shift:	2
Langauge:	Other

Section:	MAITHILI
Item No:	1
Question ID:	385541
Question Type:	MCQ
Passage:	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास[मिस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो [मश: गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुत: शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेश्मे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रारम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या कें पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपें स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति कें स्पष्टत: राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	शिक्षाक विकास आ समृद्धि में योगदान अहि–
A:	विज्ञानक महत्वपूर्ण
B:	भाषाक महत्वपूर्ण
C:	साहित्यक महत्वपूर्ण
D:	संगीतक महत्वपूर्ण

Section:	MAITHILI
Item No:	2
Question ID:	**385542**
Question Type:	MCQ
Passage:	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मशः गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ’ जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ’ जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुतः शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क’ लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र ‘विद्यासिन्धु’ जमि क’ लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक ‘अ’ ‘मिथिला’ मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– ‘यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टतः राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	‘भाषा’ अछि
A:	अपरिवर्तनशीय
B:	चिर परिवर्तन शील
C:	विकास शील
D:	संगठन शील

Section:	MAITHILI
Item No:	3
Question ID:	**385543**
Question Type:	MCQ
	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू।

Passage:

प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू।

शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मश: गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि।

शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द

सकैत अछि। वस्तुत: शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ

सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल।

श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टत: राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।

Question:	व्यक्तिक–व्यक्तित्व निर्माण होइत अछि–
A:	परिभ्रमणक माध्य में
B:	तीर्थाटनक माध्य में
C:	विचार विनिमयक माध्य में
D:	शिक्षक माध्य में

Section:	MAITHILI
Item No:	4
Question ID:	**385544**
Question Type:	MCQ

प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू।

शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मश: गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि।

Passage:	शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उत्तरदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुतः शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टतः राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	शिक्षाक माध्य में मनुष्य महत्वपूर्ण योगदान द–संकेत अछिः–
A:	सामाजिक जीवन मे
B:	गृहकार्यक जीवन मे
C:	राष्ट्रीय जीवन मे
D:	व्यक्तिगत जीवन मे

Section:	MAITHILI
Item No:	5
Question ID:	**385545**
Question Type:	MCQ
	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उत्तार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मशः गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उत्तरदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुतः शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत

Passage:	जाहि भाषा मे ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टतः राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	शिक्षाक मूल उद्देश्य थिक–
A:	आन्तरिक शक्ति विकास
B:	बाह्य शक्तिक विकास
C:	सामाजिक चेतनाक विकास
D:	तकनीकी क्षमताक विकास

Section:	MAITHILI
Item No:	6
Question ID:	**385546**
Question Type:	MCQ
Passage:	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं☐ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मशः गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रुपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुतः शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक

	एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टतः राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक आदर्श अछि
A:	मातृभाषा
B:	अंगरेजी भाषा
C:	हिन्दी भाषा
D:	संस्कृत भाषा

Section:	MAITHILI
Item No:	7
Question ID:	**385547**
Question Type:	MCQ
Passage:	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास[मिस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो [मिशः गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुतः शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा

	सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टत: राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	बालक का समक्ष समस्या रहैत अछि
A:	एक प्रकारक
B:	इ प्रकारक
C:	तीन प्रकारक
D:	चारि प्रकारक

Section:	MAITHILI
Item No:	8
Question ID:	**385548**
Question Type:	MCQ
Passage:	प्रस्तुत गद्यांश आधार पर प्रश्न सं□ 1 से 8 घटिक उद्धार लिखू। शिक्षाक विकास आ समृद्धिये भाषाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। एहि विकास{मिस जतय शिक्षा कबदलल ततय भाषामे सेहो {मिश: गुणात्मक परिवर्तन भेल अछि। कतेक बेर एतेक दूर धरि रूपान्तर भल अछि जे प्राचीन भाषा एकदम नव बनि गेल अछि,ओ अपन रूप आ रंगे नाहि, नामो बदलि लेलक अछि। जे देश जंतेक समृद्ध आ उन्नत रहल ओकर भापा ओतबे समृद्ध आ उन्नत रहतैक। यह कारण थिक जे भाषा चिरपरिवर्तनशील अछि। शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ओकर आन्तरिक शाक्तिक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतापूर्वक भ' जाइत अछि। आ, ओ एक उद्धारदायी नागरिकक रूप मे जनमत समक्ष अबैत अछि। एहिसँ ओकरा अपन अधिकार आ कर्तव्यक बोध भ' जाइत छैक आ ओ राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। वस्तुत: शिक्षाक मूल उद्देश्ये थिक व्यक्तिक आन्तरिक शक्तिक विकास करब। आन्तरिक शक्तिक वास्तविक विकास परिचित परिवेशमे सुगमतासँ होइत अछि। नेना जाहि वातावरण मे पालित–पोषित होइत अछि, ओकर विकासपर आन्तरिक प्रभाव पड़ैत छैक। जाहि भाषा में ओ बानब सिखैत अछि, ओहि भाषाके जो अत्यन्त सहजतासँ अपना सकैत अछि या यत्न कयलासँ ओहिपर अधिकार प्राप्त क सकैत अछि। ओकर विकास आ निर्माण जाहि परिवेशमे होइत अछि ओहि परिवेशमे ओहि भाषाक प्रभुत्व रहैत अछि। एहि कारणे ओहि भाषाक समस्त सूक्ष्म तत्वके अकस्मातआत्मसात क' लैत अछि आ पैघ भेलापर ओहि भाषाक माध्यमसँ अध्ययन प्रांरम्भ सामाजिक स्थिति आ समस्या केँ पत्रिकाक माध्यम सँ पाठक लग राखब मिथिला मोदक सेहो पहिल काज छलैक। एहि पत्रिका मे कविता–कथा कम नहि छपल, किन्तु शिक्षा आ भाषाक प्रसंग जतेक विमर्श भेल से संचालक आ सम्पादकक दृष्टि–पथक सूचक थिक एतबे नाहि, विभिन्न प्रकारक सामाजिक कुरीति पर सेहो ध्यान देल गेल। भार–दोरक प्रथा पर वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' जमि क' लिखलनि। विचारक दिशा जे हो, मुदा सनातन धर्म राजधर्म आ मिथिलाक अस्मिता पर खूबे लीखल गेल। कृषि, वाणिज्य, उद्योग सामाजिक संगठन आ एहने अन्यान्य विषय मोदक सूची मे छल। श्रीमैथिलीक 'अ' 'मिथिला' मे सामाजिक पक्ष पर बलघात आरो बढ़ि जाइत अछि। श्रीमैथिलीक प्रथम अंक मे सम्पादक लिखने छथि– 'यादि समस्त भारतवर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे–संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होयब इष्ट तौं एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार–विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। एहि पत्रिकाक विषय सर्वथ साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक जे सामाजिक सुरीति व कुरीति अछि तकर आलोचना कय पत्रिका मे विशेष रूपेँ स्थान दल जेतैक। एहिठाम सम्पादक प्रत्रिकाक प्रयोजन आ नीति केँ स्पष्टत: राखि देलनि अछि। साहित्यक ओ विरोधी नहि छलाह, मुदा सामाजिक स्थितिक विवेचन हुनक प्राथमिकता छलनि। कारण स्पष्ट अछि– मिथिलाक उन्नति।
Question:	मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाकें स्वीकार कयल गेल अछि:

A:	समाजक उन्नति पर सहकारिता
B:	राष्ट्रक उन्नति पर अनिवार्यता
C:	राज्यक उन्नति पर अधिकार
D:	परिवारक उन्नति पर स्वामाविकता

Section:	MAITHILI
Item No:	9
Question ID:	**385549**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरके ँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाके ँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहे ँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणे ँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतय:।''अर्थात् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिके ँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सी वी रमण नेवेल पुरस्कार से सम्मानित मेलाह
A:	1927 ई□ क
B:	1925 ई□ क
C:	1930 ई□ क
D:	1934 ई□ क

Section:	MAITHILI
Item No:	10
Question ID:	**3855410**
Question Type:	MCQ

Passage:	1930 ई□ मे रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाकेँ 1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतय:।''अर्थात् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	'रमण प्रभावक' आविष्कार उपस्थित कयलक
A:	राष्ट्रीय दृष्टिकोण के
B:	अन्तरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के
C:	मौलिक दृष्टिकोण के
D:	दृष्टिकोण के

Section:	MAITHILI
Item No:	11
Question ID:	**3855411**
Question Type:	MCQ
	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाकेँ 1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे

Passage:	भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पद्यिा अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पद्यिा परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सी□ वी□ रमण प्रोफेसर छयाह–
A:	रसायन शास्त्रक
B:	इतिहासक
C:	जीव विज्ञानक
D:	भौतिकीक

Section:	MAITHILI
Item No:	12
Question ID:	**3855412**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाकेँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पद्यिा अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पद्यिा परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ

	कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक़ छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	रमण अनुसंघानक स्थापना मेल
A:	कोलकाता मे
B:	बंगलोर मे
C:	दिल्ली मे
D:	विशाखा पट्टनम मे

Section:	MAITHILI
Item No:	13
Question ID:	**3855413**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरके ँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द ख़ुरानाके ँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहे ँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणे ँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिके ँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक़ छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सज्जन पुरूषक सम्पत्ति होइत अछि
A:	परोपकार लेल
B:	लोक दिखावा लेल
C:	व्यक्तिगत लाभ लेल

D:	तीर्थाटन लेल

Section:	MAITHILI
Item No:	14
Question ID:	**3855414**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द ख़ुरानाकेँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतय: ।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सी□ वी□ रमण राष्ट्रीय आचार्य भेलाह
A:	1950 ई□ मे
B:	1955 ई□ मे
C:	1948 ई□ मे
D:	1947 ई□ मे

Section:	MAITHILI
Item No:	15
Question ID:	**3855415**
Question Type:	MCQ
	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न

Passage:	दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुराना‍के 1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सी□ वी□ रमण 1954 में पुरूस्कृत कएल गोलाह–
A:	पद्म भूषण सँ
B:	पद्म विभूषण सँ
C:	साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ
D:	भारत रत्न सँ

Section:	MAITHILI
Item No:	16
Question ID:	**3855416**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाकेँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ

	सम्पद्धि अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थात् सज्जन पुरूषक सम्पद्धि परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक़ छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	हिनका 1958 में प्राप्त भंलनि–
A:	'' लेनिन 1958 में प्राप्त भंलनि–
B:	'' नॉवेल शंति पुरस्कार ''
C:	'' भाषा भारती सम्मान ''
D:	'' ऑक्सफोर्ड पुरस्कार ''

Section:	MAITHILI
Item No:	17
Question ID:	**3855417**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द ख़ुरानाकेँ 1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकद्धा विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पद्धि अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतयः।''अर्थात् सज्जन पुरूषक सम्पद्धि परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक़ छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि।

	हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	सी□ वी□ रमण प्रतीक छलाह :–
A:	{ान्तिक दूतक
B:	सद् भावनाक मूर्तिक
C:	सादा जीवन उच्च वियांटक
D:	परा{मीपुरूषक

Section:	MAITHILI
Item No:	18
Question ID:	**3855418**
Question Type:	MCQ
Passage:	1930 ई□ में रमण–प्रभाव (रमण–इफेक्ट) के लेल डा□ रमण विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गोलाह। एहि सम्बन्धमे अनुसंधान ओ 1928 ई□ मे कयने छलाह। ओ एशियाक सर्वप्रथम वैज्ञानिक छलाह, जिनका नोबेल पुरस्कार भेटल छलनि। ओना एहिसँ पूर्व, साहित्यक लेल रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ ई पुरस्कार भेटल छलनि। आ एहि तरहँ डा□ रमण नोबेल पुरस्कार प्राप्त कायनिहार दोसर भारतीय छलाह। भारतेमे उत्पन्न दोसर वैज्ञानिक डा□ हरगोविन्द खुरानाकेँ1968 ई□ में नोबेल पुरस्कार भेटलनि। रमण प्रभावक विषयमे जिज्ञासा होयब स्वाभाविक। एकटा वैज्ञानिक पत्रिका थोड़ शब्दमे रमण–प्रभावक मूल्यांकन एहि तरहेँ कयलक अछि–'रमण–प्रभावक आविष्कार वैज्ञानिक अनुसांधनक क्षेत्र मे एकटा मौलिक दृष्टिकोण उपस्थित कयलक अछि। जकर समानता विगत अनुसांधन–'एक्सरेज रेडियो एक्टिविटीज क आविष्कारसँ कयल जा सकैछ।'' नोबेल पुरस्कार भेटलोक बाद ओ दू वर्ष धरि अर्थात, 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय मे पूर्ववत् कार्य करैत रहलाह। तत्पश्चात, डा□ रमण 1934 सँ 1948 धरि बंगलोरमे भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस) मे भौतिकीक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कयलनि। ओ 1948 ई□ मे बंगलोरमे रमण अनुसंधान संस्थानक स्थापना कयलनि आ अपन जीवनक अंतिम क्षण तक एहि संस्थानक निर्देशक रहलाह। ओना हुनका विज्ञान सँ सम्पत्ति अर्जित करबाक कहियो उद्देश्य नहि रहलनि, मुदा संयमित आ सादा जीवन बितयबाक कारणेँ जे बचत भेल छलनि एवं पुरस्कार स्वरूप जे राशि भेटल छलनि, ताहि राशिक सदुपयोग ओ रमण संस्थानक स्थापनामे कयलानि। कहल जाइत अछि जे ''परोकाराय सतां विभूतय:।''अर्थत् सज्जन पुरूषक सम्पत्ति परोपकारक लेल होइत अछि। एहि उक्तिकेँ ओ अपन जीवनमे चरितार्थ का देखओलनि। हुनका भारत सरकार 1948 ई□ में 'राष्ट्रीय आचार्य' (नेशनल प्रोफेसर) पद पर प्रतिष्ठित कयलक। ओ 1954 ई□ मे राष्ट्रपतिक दिससँ भारत–रत्न क सर्वोच्च अलंकरणसँ अलंकृत कयल गेलाह। 1958 ई□ मे ओ सोवियत संघक सवोच्च' लेनिन' शांति पुरस्कार सँ सम्मनित भेलाह। डाक्टर रमण 'सदा जीवन उच्च विचार' क प्रतीक् छलाह। ओ निष्काम कर्मयोगी छलह आ शांतिक उपासक रहथि। हुनक देहावसान नवम्बर 1970 ई□ में भ गेलनि।
Question:	हिनक मृत्यु भेलनि
A:	1965 ई□ मे
B:	1967 ई□ मे
C:	1972 ई□ मे
D:	1970 ई□ मे

Section:	MAITHILI

Item No:	19
Question ID:	**3855419**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	मैथिली पझिकाक विश्लेषण अछि
A:	सोझ काज
B:	टेढ़ काज
C:	व(काज
D:	ओझशष्य काज

Section:	MAITHILI
Item No:	20
Question ID:	**3855420**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत

	अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	विषय–वस्तुक दृष्टि कोण से पत्रिका में कर्तक प्रकाटक सामग्री भेटैत अछि?
A:	चारि प्रकारक
B:	तीन प्रकारक
C:	दू प्रकारक
D:	पाँच प्रकारक

Section:	MAITHILI
Item No:	21
Question ID:	**3855421**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना कऽ अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भऽ गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यतः प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी तऽ साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा कऽ सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	साहित्यक उत्पत्ति भेल अछि–
A:	सभ्यता सँ
B:	संस्कृतिक सँ
C:	समाजे सँ

D:	परम्परा सँ

Section:	MAITHILI
Item No:	22
Question ID:	**3855422**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय कें आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन कें साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु कें विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना कें प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपें एहि विषयकें स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	लिखबाक ढंग कोने लेखन के बनबैत अछि–
A:	विज्ञान
B:	साहित्य
C:	इतिहास
D:	सैद्धान्तिक

Section:	MAITHILI
Item No:	23
Question ID:	**3855423**
Question Type:	MCQ
	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय कें आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन कें साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु कें विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि

Passage:	पत्रिकाक विषय–वस्तु कें विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना कें प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपें एहि विषयकें स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका में बेसी ध्यान छल
A:	कथा विषय पर
B:	कविता विषय पर
C:	नाटक विषय पर
D:	साहित्येतट विषय पर

Section:	MAITHILI
Item No:	24
Question ID:	**3855424**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय कें आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यतः प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन कें साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु कें विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना कें प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपें एहि विषयकें स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	मैथिलीक पहिल पत्रिका थिक–
A:	मिथिला मोद

B:	मिथिला मिहिर
C:	मैथिल हित साधन
D:	मिथिला दर्शन

Section:	MAITHILI
Item No:	25
Question ID:	**3855425**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	मैथिल हित साघन प्रकाशित भेल–
A:	1909 ई□ मे
B:	1905 ई□ मे
C:	1907 ई□ मे
D:	1906 ई□ मे

Section:	MAITHILI
Item No:	26
Question ID:	**3855426**
Question Type:	MCQ
	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब

Passage:	अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	एहिठाम सम्पादक पत्रिकाके स्पष्टत: राखि दोलनि अछि।
A:	स्पष्ट्र आ नीति
B:	नीति आ नीति
C:	प्रयोजन आ नीति
D:	उद्देश्य आ नीति

Section:	MAITHILI
Item No:	27
Question ID:	**3855427**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय केँ आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यत: प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन केँ साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु केँ विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना केँ प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपेँ एहि विषयकेँ स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक

	शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	मिथिला मोदक पहिल काज छलैक–
A:	राजनीतिक स्थितिके उजागर करन
B:	साहित्यिक स्थितिके उजागर करन
C:	सामाजिक स्थितिके उजागर करन
D:	आर्थिक स्थितिके उजागर करन

Section:	MAITHILI
Item No:	28
Question ID:	**3855428**
Question Type:	MCQ
Passage:	मैथिली पत्रिकाक प्रवृत्तिपरक विश्लेषण टेढ़ काज अछि। पत्रिकाक बहुलता आ अवधिक अल्पता, उत्साहक अधिकता तथा सम्पादन–दृष्टिक विविधता आदि एहन कारण अछि जे मैथिली पत्रिकाक स्वरुप–स्थापन आ प्रवृत्ति–निर्धारण मे बाधा उत्पन्न करैत अछि। तथापि पत्रिकाक प्रतिपाद्य विषय कें आधार बना क' अगाँ बढ़ि सकैत छी। विषय–वस्तुक दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिका मे दू प्रकारक सामग्री भेटैत अछि : साहित्य आ साहित्येतर। एकरा साहित्य पर केन्द्रित आ समाज सँ सम्बन्धित विषयक रुप मे सेहो देखल जा सकैत अछि। ओना, साहित्य सेहो समाजेक उपजा थिक, तइयो एकर स्वतंत्र सत्ता भ' गेलैक अछि। बहुत गोटे लेल साहित्य–सर्जन साध्य अछि। तहिना अर्थ आ धर्मक मादे लीखब अथवा इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर विचार करब साहित्यिक काज नहि कहबैत अछि। कहबाक माने ई जे सामान्यतः प्रत्येक लेखन साहित्य नहि थिक। विषये नहि, लिखबाक ढंग सेहो कोनो लेखन कें साहित्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिली पत्रिकाक विषय–वस्तु कें विभाजित करी त' साहित्य आ साहित्येतर कोटि बनैत अछि आ तखने ई तथ्य फरिछा क' सोझाँ अबैत अछि जे मैथिलीक प्रारम्भिक पत्रिका मे साहित्येतर विषय पर ध्यान बेसी छल, साहित्य पर कम। पत्रिकाक संचालक–सम्पादक सामाजिक स्थिति पर लिखित रचना कें प्रमुखता दैत छलाह। मैथिल हित साधन (1905) मैथिलीक पहिल पत्रिका अछि। ओकर जे अंश आब उपलब्ध अछि ताहि सँ साफ झलकैत अछि जे मैथिली समाज मे आधुनिक शिक्षाक प्रसार पर ओकर जोर छलैक। गणित, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान आदि सँ सम्बद्ध आलेख पत्रिका मे छापब ओकर प्राथमिकता रहैक। करैत अछि तँ ओकरा सोझाँ भाषाक समस्या नहि रहैछ, केवल विषयेक समस्या रहि जाइत अछि। अल्प श्रमेये ओ विषयक गूढ़तामे प्रवेश पाबि सकैछ। किन्तु मातृभाषासँ पृथक् जे अन्याय भाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रारम्भ होइत अछि तँ समरुप गम्भीर रुपमे हमरा सभहक समक्ष आबि जाइत अछि। बालकक समक्ष दू प्रकारक समस्या रहैत अछि– एक तँ अपरिचित भाषा आ ज्ञातव्य विषय। ओकरा अपन शक्तिक द्विधा विभक्ति करय पड़ैछ जकर परिणाम हितकारी नहि होइछ। जँ ओ भाषापर जोर दैत अछि तँ विषयक ज्ञान अपूर्ण रहि जाइछ। मेधावीसँ मेधावी छात्र एहन कुंठित रहि जाइछ। यैह कारण अछि जे कतेको शिक्षाशास्त्री व्यवहार रुपें एहि विषयकें स्वीकार कयलनि अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रुपमे मातृभाषाक आदर्श हो।
Question:	भार–दोरक प्रथा पर लिखललि–
A:	मधुसूदन झा
B:	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
C:	वैद्यनाथ भिक्ष 'विद्यासिन्धु'
D:	सुभद्र झा

Section:	MAITHILI
Item No:	29
Question ID:	**3855429**
Question Type:	MCQ
	सही सन्धि–विच्छेद का चयन करू। A. सम् + याम – संयम

Question:	B. अहय + कार – अहंकार C. सन + सार – संसार D. नि: + स्तार – निस्तार E. सत् + भावना – सद्भावना
A:	A एवं B
B:	A एवं C
C:	A एवं D
D:	A एवं E

Section:	MAITHILI
Item No:	30
Question ID:	**3855430**
Question Type:	MCQ
Question:	30 देशज शब्द अछि: A. 'फोन' B. 'गदहा' C. 'टी.भी' D. 'मोबाईल' E. 'बासन'
A:	A
B:	B
C:	C,D
D:	B,E

Section:	MAITHILI
Item No:	31
Question ID:	**3855431**
Question Type:	MCQ
Question:	निम्न में सँ ज्योतिरीश्वर द्वारा रचित पोथीक चयन A. 'नर्मदा सागर सहक'+ B. 'मिथिला तत्व विमर्श+ C. 'वर्णरत्नाकर'+ D. 'वेदान्त दीपक'+ E 'घुर्तसमागम'+
A:	A एवं B
B:	B एवं D
C:	C एवं E
D:	A एवं C

Section:	MAITHILI
Item No:	32
Question ID:	3855432
Question Type:	MCQ
Question:	1920 ई□ में कोन–कोन रचनाकार जन्म वर्ष अछि: A. कुमार गंगानन्द सिंहक B. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक C. मनमोहन झाक D. प्रभास कुमार चौधरीक E चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क
A:	A एवं B
B:	B एवं C
C:	C एवं D
D:	D एवं E

Section:	MAITHILI
Item No:	33
Question ID:	3855433
Question Type:	MCQ

Question:

I	II
A. जगदीश चन्द्र झा	I. हाथीक दाँत
B. राजकमल चौधरी	II. बड़ा दिनक धुमधाम
C. प्रबोध नारायण सिंह	III. ललका पाग
D. लालदास	IV. जानकी रामायण

A:	A-IV, B-II, C-I, D-III
B:	A-III, B-I, C-IV, D-II
C:	A-II, B-III, C-I, D-IV
D:	A-II, B-IV, C-III, D-I

Section:	MAITHILI
Item No:	34
Question ID:	3855434

Question Type:	MCQ
Question:	
A:	A-I, B-III, C-II, D-IV
B:	A-IV, B-II, C-III, D-I
C:	A-II, B-III, C-I, D-IV
D:	A-III, B-I, C-IV, D-II

List-1	List-1I
A. अशोक	I. ँकि
B. उमाकन्त	II. भरि छीपा भात
C. लिली रे	III. बाबाक आत्मीयता
D. विभा रानी	IV. रंगीन परदा

Section:	MAITHILI
Item No:	35
Question ID:	**3855435**
Question Type:	MCQ
Question:	निम्न मे सँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' का गद्यांश चयन करु। A. सकल वनस्पति परम पवित्र प्राणी मात्रक बड़का मित्र B. घेमुड़ा त्रियुगा जीवछक रहे कमला वन्मतिसँ सिक्त देह। C. हम 'राधेय' बनल छी मुदा 'पृथा' जानि रहल अछि। D. भूमि–फलक पर दूर क्षितिज घरि शस्यक चित्र महान E. औ किछु गाछ लगा०, बैसल बैसल पुण्य कमा०
A:	केवल A,B
B:	केवल A,C
C:	केवल A,D
D:	केवल A,E

Section:	MAITHILI
Item No:	36
Question ID:	**3855436**
Question Type:	MCQ
	निम्न मे सँ मायानन्द मिश्रक उपन्यासक चयन करु। A. भामती B. पृथ्वीपुत्रा

Question:	C. स्वेदजीवि D. मंत्रपुत्र E. खोता आ चिड़े
A:	केवल A, B, C
B:	केवल B, C, D
C:	केवल C, D, E
D:	केवल D, E

Section:	MAITHILI
Item No:	37
Question ID:	**3855437**
Question Type:	MCQ
Question:	'हलघर' शीर्षकक रचना अछि। A. चन्दा झा B. उमापति C. ईशनाथ झा D. विद्यापति E. सुरेन्द्र झा सुमन
A:	केवल A,C,D
B:	केवल B,C
C:	केवल A,E
D:	केवल A,D, E

Section:	MAITHILI
Item No:	38
Question ID:	**3855438**
Question Type:	MCQ
Question:	'ईच्छा' शब्दक पर्यायवाची अछि। A. 'अचरज' B. 'मनोरथ' C. 'प्रभा' D. 'स्पृहा' E. 'चिन्ता'
A:	A एवं C
B:	B एवं D
C:	C एवं E
D:	D एवं A

Section:	MAITHILI
Item No:	39
Question ID:	**3855439**
Question Type:	MCQ
Question:	सही विपरीतार्थक शब्दक चयन करू: A. अनुराग – विराग B. हाँज – झुण्ड C. शोक – दु:ख D. उन्नति – अवनति E. समीप – लग
A:	B-D
B:	A-D
C:	C-B
D:	E-D

Section:	MAITHILI
Item No:	40
Question ID:	**3855440**
Question Type:	MCQ
Question:	तालु उच्चरित स्थल अछि। A. 'ण' B. 'ड' C. 'श' D. 'घ' E. 'ई'
A:	A एवं D
B:	B एवं D
C:	C एवं E
D:	A एवं E

Section:	MAITHILI
Item No:	41
Question ID:	**3855441**
Question Type:	MCQ

शीर्षक I	लेखक II
A. समृक्षावृद्धिा	I. सेरेन्द्र का सुमन
B. मैथिली साहित्य	II. कुमार गंगानन्द सिंह

C. मिथिलाक साहित्य	III. रमानाथ का
D. राष्ट्रीय एकताक महत्व	IV. अमरनाथ का

A:	A-II, B-IV, C-III, D-I
B:	A-III, B-IV, C-I, D-II
C:	A-IV, B-II, C-I, D-III
D:	A-I, B-III, C-IV, D-II

Section:	MAITHILI
Item No:	42
Question ID:	3855442
Question Type:	MCQ

Question:

शीर्षक I	लेखक II
A. घरदेखिया	I. उषा किरण खान
B. सीमक लच्मी	II. ललित
C. बाबी	III. सुभाष चन्द्र यादव
D. ओबर लोड	IV. प्रभाष कुमार चौधरी

A:	A-III, B-I, C-IV, D-II
B:	A-II, B-IV, C-I, D-III
C:	A-IV, B-II, C-III, D-I
D:	A-III, B-II, C-IV, D-I

Section:	MAITHILI
Item No:	43
Question ID:	3855443
Question Type:	MCQ

Question:

निम्न मे सँ सही कथनंक चयन करू।

A. रामदेव का कथाकार छथि।

B. लेखनाथ मिश्र कथाकार छथि।

C. सुभाष चन्द्र यादव कथाकार छथि।

	D. नवीन चन्द्र मिश्र कथाकार छथि। E. अमरेश पाठक कथाकार छथि।
A:	केवल A,B
B:	केवल A,C
C:	केवल A,D
D:	केवल A,E

Section:	MAITHILI
Item No:	44
Question ID:	**3855444**
Question Type:	MCQ
Question:	एहि मे सँ नाटककारक चयन करू। A. देवेन्द्र झा B. सुद्यांशु शेखर चौधरी C. गोविन्द झा D. महेन्द्र झा E. महेन्द्र नारायण राम
A:	केवल A,B,C
B:	केवल B,C
C:	केवल C,D
D:	केवल C,D,E

Section:	MAITHILI
Item No:	45
Question ID:	**3855445**
Question Type:	MCQ
Question:	व्युत्पत्रिक विचार सँ संज्ञाक कोन–कोन भेद अछि। A. 'प्रत्यय' B. 'रूढ़ि C. 'उपसर्ग' D. यौगिक E. 'योगरूढ़ि'
A:	A,B एवं D
B:	B,D एवं E
C:	C,B एवं D
D:	A,C एवं D

Section:	MAITHILI
Item No:	46

Question ID:	**3855446**
Question Type:	MCQ
Question:	अशुद्ध शष्दक चयन करू। A. 'वकील' B. 'छीण' C. 'कृष्न' D. 'औरत' E. 'क्षेम'
A:	A एवं C
B:	B एवं E
C:	C एवं D
D:	B एवं C

Section:	MAITHILI
Item No:	47
Question ID:	**3855447**
Question Type:	MCQ
Question:	सही सन्धि–विच्छेदक चयन करू। A. उत् + आर – उदार B. जगत् + ईश – जगदीश C. उत + नत – उन्नत D. नि: + बल – निर्बल E. सम + सार – संसार
A:	A,B एवं D
B:	C एवं D
C:	D एवं E
D:	B एवं C

Section:	MAITHILI
Item No:	48
Question ID:	**3855448**
Question Type:	MCQ
Question:	एहि मे में कोन–कोन नाटक अछि। A. अन्तिम प्रणाम B. सुन्दर संयोग C. प्रबन्ध पारिजात D. रंगीन परदा E. प्रलय रहस्य

A:	केवल A,B
B:	केवल A,C
C:	केवल A,D
D:	केवल A,E

Section:	MAITHILI
Item No:	49
Question ID:	**3855449**
Question Type:	MCQ
Question:	भागलपुर सँ प्रकाशित पत्रिका अछि। A. 'मिथिला दर्शन' B. 'मिथिला मिलन' C. 'शोघार्थी' D. 'मिथिला सृजन' E. 'मिथि–मालिनी'
A:	केवल A,B,C
B:	केवल C,D,E
C:	केवल C,E
D:	केवल D,E

Section:	MAITHILI
Item No:	50
Question ID:	**3855450**
Question Type:	MCQ

Question:

लेखक I	जन्मवर्ष II
A. अमरनाथ का	I. 1936 ई□
B. रामानाथ का	II. 1908 ई□
C. हरिमोहन का	III. 1897 ई□
D. रामदेव का	IV. 1906 ई□

A:	A-III, B-IV, C-II, D-I
B:	A-I, B-III, C-II, D-IV
C:	A-IV, B-II, C-III, D-I
D:	A-I, B-IV, C-II, D-III